



॥ ६॥ ॥ ६॥ यनमशागनयप्रनिशंभु विवालाकविप्रधन नोऽत्र वाक्
कैः समसं काष्ठां दाडिमिकसमायमां ॥ यन्मयागयनिकाष्ठां कूकभाप
यसं निशंभुः सुवत्सुकुटमादिक किं किं जीशालमछितां ॥ कलालिक
लसं काष्ठां कूटिलालकयज्ञवां प्रत्यग्रदसं कासीवदनां शक्रः
मछली ॥ किं विदधन् कूटिलाललाजमदुपटिकां पिनाकीः

विजिह्वा ३

धननाकात्री सुरुवं यममध्वरी ॥ आनन्दमदिनालाल नीलानि
लिंगलायनी ॥ सुवन्मयुषसं काष्ठां विनगीहमकूटलां ॥ सुगहम
छलां शर्गादिभुं देमनमछलां ॥ विध्वं कर्मादिनिमान सुप्रस
स्यष्टनासिकां ॥ गाम्रविद्रुमविवाह उकाष्ठिममभायमां स्मि
नामा धूर्याविक्रिता माधूर्यावससागनां ॥ अनोपमग्रु (दायनां विवृः
कादहा (दाहिनां काम्पूयावां महाधयीं मछलिलल्लिगच्छु ॥ ४ ॥ ७

कात्यलदलाकायां सुकृमानकयाम्बुजां। कयाम्बुजनरवधानविता। नि
 गनरुसुतां। मृकाहायलगायनां समननयथाधयां। प्रिवलीवलयाय
 कर्मधयदशसुछांरुनां। लावधसदियावर्मा। कायधरि विरुषिगधि
 श्रनधुयलयाठिन। कायियक निरुद्धिचो। निगुरुविं वद्विबुधु। यामत्राजि
 विवाजिनां। कदलिललिंगसीरां। शुक्रमात्राकमीध्वयीं। लावाधकदलि
 दुष्यरुवायुगलमंजिनां। वक्रविष्णु शिवायल निधुधुचननाम्बुजां। धाता

तं विनी ३

शुभगर्गकाधार्। कानि सन्तानहानिनीं। लाहिनजितसिंदूररुवादादि
 मयागिनी। चक्रवमुयविधानां। पाठांकुशकगेधनां। चक्रपथानि
 विरुद्धानुचक्ररुचनमहिनां। यरुद्धां प्रितर्गु। धीयवाधधन
 धयी। कपूत्राधकलामिधु। गां वृत्तपूविगातनां। रुगदाह्लादरु
 ननी। सर्वमंगमयीदेवी। सर्वशाश्वतसुन्दरी। सर्वलक्ष्मिमयी
 नित्यां। ययमानन्दनन्दिनी। महप्रियूचमूद्रामु। स्मृत्वावा

हनत्रूपयाविद्यायावाक्शरुगेममस्कायनियूकया॥
पूर्वाकायासाधकदामरुप्रियूनसून्यनी॥चक्रमधुसंविः
खगतामूद्रांप्रदधधग॥॥आद्योगिकानविन्यस्य,शिकानेगद्वि
न्यभगतावहमिदिकानमीलिरव,कावषधंलिरवहमिदम(धुवव
न्यवचके,विंशमायाविरुषिर्न,षड्भानस्यवहिवृत्तंननीष्टदः
लर्कलिरवग॥वहिवृत्तंनमीयूक,उपूयकानसंयुग,कालवर्ममु

किमाद्यानि,यशमनीनर्धायध॥केनालवदनीधारा,मूकाका
धांविमुक्तं,दक्षिणकालिकादिशा,मधुमान्नाविरुषिर्गाम॥
सद्यःकृतमिदःरवक्षमद्वयकनाम्बुजा,भूर्यववद(क
वभ(धद्वयकनाम्बुजा॥महामधयसीनन्वी,तथेववदिगंव
नां,कष्टवक्षकम,लुलीगलद्विचयचिर्ता॥कष्टवर्तसता

नामोऽविद्युर्मरुतानकां॥द्यावदंशुं कालास्यांवीनान्नतयथाधर्मा॥
सर्वलोकान्तरुषांगीसद्वाहुरुविभावनीशतनूयमहादवद्वयथायत्रि
संस्तिगी॥शिवारिथनिर्लेनूयारिगुहुदिदूसमन्विता॥महाकालनव
समन्वियवागततामुवा॥ ॥२ नीलावर्णमहाकाशिप्रिमूरवानवन्ता
वनापीतनकुयक्रिहीवकुंडर्नपावकायममन्दलविगनग्राभ्यश्र
ववाहगतनपयार्पिगजलाध्वजगतापचन्द्रार्धकृतछारवनासकाविः

शानिमधुध्वनकविपूषसंयगा।श्रुष्टिफुल्ल(शरुधामोपिकाया
लमालिनी।किंकिनीनूपुनावाववीनधजयवागमा।शिवप्रगा
समानुरामूरव(शातिगनिर्ज्वाह्नुद्याद्यावन्नाविष्णूंयद्रध्वनः
सदाशिवशपीतश्चामयकधूम्र(ध्वनाहंयचकालिका।शवद्रय
लुहाकिध्वलखद्वाङ्गायधध्वनकागर्जनामूरवनिश्रिद्धाशिव
धस्त्रागिलाचनवध्वयध्मासनादवीचीनान्नतयथाधर्मावामरु

सुकयालं च न कयु ह्मुनि (भारुना) भावयति प्रि शूलक सहायः
यकि (भक) च न कयु ह्मुनि (भारुना) भावयति प्रि शूलक सहायः
हं चरव द्वाहं स न वालक भावि हं चित्कला कलनांगरुं झा निवृ
पाञ्चक यला निर्वो न यदमा गीगारु वा निताह (भाचय) अस्मि
नृपे महापदानववकु निवृजय गा वदु निरुय नृपा नि कालिका

गामहृष्य नी शरुता सिद्धिपुद निरुया कोलमा (जप्रवर्णि) कामु
कला लिका या गा विरुं कालिखमा गनाय ह्या प्ररु वमठ
नवनि, छं न वसं रगा दुर्वा साना य या द्या वा शिष्ठ कोलिक सु
का पि ४ व ४ यं य स फा ह द कारु सिद्धि या गना अदिमा द्या
महा सिद्धि ग र्वा ग सिद्ध य ४ स्म ना भा अ या सिद्धि या कालि सानि
हं (भ) ह्य नी जिवा ४ र वा क्त मू दू र्ना था य व द्वा प दानः गिन स्व (व)

मुख्यं प्रवृत्तं स ह्युदलकमलकविक्रकास्तु नदिन्दुसुन्दनचन्द्रसधुलान्त
मेतदुसपी १० निजगुनं ध्यायेत् ॥ यथा ॥ शुद्धरूढिकस्य कार्श ॥ ४॥ ॥ मना
द्यायाखिलाद्यायमायिनं गतमायिनं मरुपाय मरुपायाधिवाययु नव
नमः ॥ ४॥ **लानं पलनं सपि** ला जायुर्धर्मानि हर्कवा ॥ नमः १००० कुनसाप
येन भ्राज्येपनि सिद्धिर्ने ॥ न कर्तव्यं पूष्याद्ये निहितमवलिहव ॥

न

पंचप्रधवमवार्य ॥ दविपप्रवद्रकमहारुनव वालयनामियंतय
महावलपनाकुमपि गलज्जहारान रास्यन प्रिपना न कविन
प्रधिधुर्लिही मरीषध सर्वसिद्धियुद सर्वविद्यतिवाय ॥ सर्वसयु
कर्यकन सर्वनामां न क्र २ सर्वकस्मानि मसाधर २ सपनिवा न स्वम
यासह आगच्छ २ धीर्धुक् २ मम कार्या सिद्धिं सहसु रुलादि स
हिरविर्लिग्द्र २ **स्वतन** २ प्रसाद **जोग** २ **जोग** २ **जोग** २ **जोग** २

इं ३ रु ३ ॥ कालिका लीनिवक वामना मां धिव रूपिनि। पधु रूप
समायांति। पत्रिवा न ग (धो) सह ॥ ३ सव रु क पडायाय मना पडा
न ॥ पडाया दाना धाव धिवा तलिवन धिव विलिखून काव रु व
याव स्वान को काय ॥ ॥ सम रु सि नि रु य ना ॥ ॥ ३ रु ३
गि क रु न वन राय ॥ काल ॥ मिन पू क रु मनु ॥ यय स्वान या ध व न स्वान

पामालसनागस्वी॥

ननार्यामस्तु ॥ अजाध्वजा कासनगनसमस्तं ॥ आसनं वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ ध्यात्वा
 हस्तपद्मं ॥ ध्यात्वा नववदनातिन्दु रावयाति ॥ ॐ आकिनि ॐ कामास्वाहा ॥ मः
 लुवानकायावधालय, पालय धूनदाव, दानासुखासुरवान ॥ ॥ ॐ वेन्द्राग्नि कि
 रत्रा, मरवावाद्य, नननरुद्रं मूरखकहं, वायिना माहि, नाका माहि, प्रका माहि, वरु
 नवस्थं धानरवंद माहि, नागरान कि नाग माहि, सिद्धिदत्त माहा ॥ धर्मपत्न, स्वा
 न, वरु, सिधल, जयल्य ॥ आलज ॥ विनीति, स्वर्नद्वय, सिधलनं निद्वय, नाग माहि

[illegible]

यद्यस्मान्नाहारायिषावत्कमानिस्त्वंविद्यावत्क॥ आदित्यवानक
नृपिक॥ **वाल्मीकीयस्यमद्रशला॥** रत्नासधानदियावत्मास
नृगननिवायद्वीयानिसगयमीस, धयानावनथडाद्वेव, ध
युलियानाव॥ **कृद्विगयखगाइ।** रुकनि, गन्तक
मीगिन॥ **द्वेयिया।** मरुसगयावदायक॥ **द्वेयियावद्विधयावनय**
लिथयना॥ गणवद्वि, यानावद्विगयावयानास, धरुद्वि

ये देवाव मिखास डल ॥ मनु थ ॥ हुं की कू कू कू ॥ मि किव के रु ला ॥ कान
 हुं हुं हुं हुं सा हा म म क म म ना म य हुं हुं हुं हुं सा हा ॥ काल ॥ य क्रा या य
 शला अ क्रा या मे नो द्वि थ हा व लं ख ज पु र्ण ना न पा सा हा य रु ला ॥ हुं स्वामि
 सी प ड प ग नू द मू खा ग्व ग के वी धा नाम श्रू ॥ सिं ध न ज पु र्ण मि सा या ना म द्वि
 थ हा व नि या ॥ काल पा व स रु ला ॥ हुं न भा व धि का य हुं कालि कालि मह
 कालि कालि कालि रा ड कालि कालि कालि कालि स म द म सि द न य
 द क व क ॥ ३

आने वामक के थलि हलिके जायमालि रुनामाना आदूरावन्द
लि॥ ध्वमन्तन मरुज कपध काल नवादि न दूर्यवच्छिन हा ने कवर
सर्वतयना सदा ला॥ ० ॥ हुं कीं विष्णो देव क्रौं कीं हुं कीं ॥ कंक मः
न उज्जयन्त वायावनाय लसद्भृशहाव करवायावनथ इत्यार्यन
वे कवरन काशला॥ ० ॥ हुं सेनवायानक्रजननखा रत्न नक्रभाष
ननि याक्रवनत्रड निशनमाहं रुद्र स्वाहा॥ काल ज ध्वमन्तन सूथया

दस्वाहा॥ कालरा लख जयपेता न भूविद्यान मंगलक इला॥
उन्नदिवा न छिद्य रयानि कान छिद्य २ स्वाहा॥ कालर हि छिद्य
मनु इला॥ कुं न कानातिर्वं मयी वं यं कुं रुद स्वाहा॥ काल
१॥ हि छिद्य मनु इला॥ कुं नमः श्रीगुरु आशा कुं इं इं॥ काल
न॥ रुस मी कदा दयी साया विकया इला॥ कुं विद्यन दं दु महा
विद्यन मनु यी धीं जलना धाय र सं तय र वा धय र सो रवय र
इं

दिर्गा गच्छ २ कुं २ रुद स्वाहा॥ कालरा जिद्वल १०००० जयलयमा
लसिद्धिया यना॥ वा मगाव क इला॥ गदय दसिया खोला न वं व
कलिव न धा दा वनि या वरु सी विन आवल पव ह ल लि दय क
गुरु आशा महा दव पा वनि कि आशा॥ लान माल वरु धन धाय म
न ज ध्व ना नू ति शव या इला॥ २ यथ्म स धा गि स वि कुं ग धीं खि मी
मगावनी एम ध्व न को २ म ना ध्व वा मी स ज ध्वी म व स त्क नाः

ह्यो संक्षमयि ह्य दृढसं पथाश्च गृह्यदृष्टि ध्रुवन
वनाह वाहिं तवर्त्तवन् किं कना धीं वलन तीर्म सतिवान्
वृहस्य निवधुस्त्रिन त्वं वलधु कु वृद्धिः ॥ ध्वननाला
द्विन सकर्त्त साग (गय समताम) पादू विधूयुनि नयः
मनव ॥ मास नयवाले सद्यध लन वानधिय कमः

नव रुथ सवाल कायावनय ॥ साखलक किन लिधान
वाल (वासलसक ल्यं दूनयाय धूनकाव साखलक कि
नवाल डाल लिनय ॥ डमरुं मंडा निनरु ला ॥ ७ ॥
कुंज सध्मानिघावानस्य निहूल सिद्धि युन आकू ॥ धर्मं क्र
यालेय कालन मजिय केरु ला ॥ ॥ ॥

ॐ श्रीं क्लीं श्रीं विष्णुनादविष्णुमूकीश
सर्वशस्त्राह ॥ ५

००॥ मस्तानयाकयल ॥ ला ० नव वू लाव नु न पयल सी ला
व सय या छ सय क पाइन नान ॥ ॥ ॥



ASHA ARCHIVES

1.155

ASHA ARCHIVES



मीदक साकपालयाधलदाकयल निव्याह साकपाल
दयविवका मना नय दाकेवलति । इति च दूयावका
यावतय ॥ ४४ ॥ नतकन विनया हा कूल लाख कूल
नता गल विपलिका यावतय ॥ ४५ ॥ कूल हा उह न
य ॥ ४६ ॥ तिनकाव लाखतय पिपिल डीया थासनय

सलायिनता कयय वायायूठ विय डीया दवन का धा
ल धया दवन उ दया आरयायूठ गान कयाथ आ व
विय लाक सवके खाक के का काय दूला पिपिल काय
गल नय ॥ ४७ ॥ नत नलिंगया घालतिथे इग्व डीदन नय
मफानय मतवा ॥ वरुण हन ना विय के म डल ॥ ४८ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवा ॥ वग १ महावग वायु वग गरुड वग
वग १ महावग मनय वने रुयययनथाकेयनदः स्वयः
द्वंद्वं स्वाहा ॥ कालन जयस वा दद्यात्त कायावनथ्याय
द्रु सवाटस सा कयाय लिखयमभव ॥ वगमनु दः
ना ॥ विक क क श्रुजमादा हो न्वर्च श्रीन के द्द सप्तमन
गधुनानामष्टमाहिं गतागः पुमथेकवल उक्ता साय

सावर्धमनन जनय निद्र ० ना गिं यात ७ ला निह
नि ॥ जनयिदे ना ॥ ॐ नमो भगवते वायु विकालाय संभ
व विर धनय धनाय य ॥ नमूकना सय २ द्वंद्वं स्वाहा
॥ का ० जयल व वय ॥ ल सिध्या श्री तु लि हाय के थ द
वत के सनु या के विधा वत व स ही न रु ला ॥ ॐ ध्याय क्ता
धा सिद्धि ना धाय नमः ॥ २ ॥ ॐ २ ॥ ॐ २ ॥ ॐ २ ॥ ॐ २ ॥ ॐ २ ॥

कुंभनरुक्मिनननरुक्मिहाहा॥ **माला** निसावान् कूटग्वलवान्
कयकसूररुजययैमयक मिसाया नामा द्विधरावध
मकनसहि कययैकैने । **विमलता सिद्धि शरी** ॥ ७ ॥ कुं
यज्ञा श्रीसिद्धिनाथाय नमः स्वाहा ॥ **नैमिषा जीमि**
द्धिना ॥ **कैनमैजै नीर श्रीरखारे समुद्र को नीर चौघर्गः**

डापिडानाशायवां विक्कासर्पमरयघेटकागर्नपिस
शीमिसापविदु कुरातु वावगीलाकाट कूटैरवारानामु
दमेवहवैहरसंभुमहादेव कावयैयः सिद्धिनहोयता
वावनवीरकीश्वान् ॥ **माला** न सखायानस्यो क
शासपुछाव वासदाय कवसमू नमस्तुते ॥ ८ ॥

हं ॐ वं वरु ॐ हं मी ॐ नय ॐ र ॐ र ॐ ॥ समानयासीति दार्जी मुलिह
यकं जयय १००० दलदि ॥ गतिनित्याखदकासनासना भावाम
वदिवरुला ॥ ६ ॥ शीलसयाहिस यिनरु। मीग नकं न धसदुदा
वन ससकल्याहियायदुला ॥ ॥ वुददसिकु ममानसवदुत
कायलदु कोटवरुद्विवावेहयके खवि रास सुदया भासवा

यावमिगदये द्वादकं नाम क्रय स्यादुला ॥ ० ॥ ॐ हं ॐ वं नः
ॐ हं ॐ वाह ॥ मालका खानजयपीदुवका निनिवसदुला ॥ ० ॥
६५ ॐ शं त्यवा ॐ मान्यवा ॐ ह ॐ द ॐ म ॐ द ॐ ल ॐ हं ॐ ल ॐ आ ॐ व ॐ न ॐ द ॐ म ॐ खान ॐ द ॐ
आ ॐ रु ॐ रा ॐ श ॥ धान पदुवा तेज मं दूव के ॥ भवामि मालका याय ॥
रपुटं जति हाथ जानि समानया भवा यियूदवनय विवल कसथीन
वारि यल नयाखिति नकं मुलि थने समतागया हाव मृहानया

रमानक हय सुन्का गा नायि नागान मिलिये कांगां नीयें कठ
हुवायि न्दु खाय महु खाय नरलो का द रि द जाय ॥ ४ ॥ पयिः
सा नर रा गा २ पयि शा नर ज सुा कू गानि नर पारा क पर मा ६
ठिया नं चा द य के नं चा स दु या ने यो ल १ क य मा ठि रिये ने मा
ल स या य गा न कं या य ॥ कु न का व गो य था मि स त ये दू
३ कां च न ज लो ॥ ११ ॥ तिल दे य म य न्सी ल उ य दे य ठं क

न ता क मा मिले ना ग संचारा ना ग संचा क य वा ध ले धू ता
क ह य पा र्व ति कां च न कु वा ॥ लाल अरुं ड का दा रा ले ना गा
ठि र ह दे ना ४ पयि सा नर ता वा सो धा कू गानि नर पारा ५
ता वा जि रा जि रा कर रा सो ता वा २ पयि सा नर अ ध र य यि
सा उ र्ध मा ऊ सो कू गानि नर पारा र ख ना ७ स व दा ना

मानव कज कय मीटि सो नयेठना न वेर नयेठना स खान
नाचामो यलास का आगमो य कावना ॥ स्वेना होय ॥ ८
नय स्का गोवर मो सो धना समलतु सि आ हलंगेव रोता
निवकार स निचोरा ॥ य काय करवोर स मो दे नो ताता मो
ताता मो करणा ॥ ११७ ॥ लज्जारु का रस वावरा ॥ जिन वा
वरणा म दल जारु चा हिये ॥ ११८ ॥ य कावना वस कि

नारस मो द्योठना रस मो रागा दे नाऊ ठू देय मु दन कां
दी होय ॥ ११७ ॥ ५ प्रिये साना हि ॥ ११८ ॥ क सुतु सिने
यारा वदः ॥ सिता म किं रुदि ॥ फुल फुल फुल चरित
काय नि लं के सरि फुल हाड चढ्य फुल मास चढ्य फुल
आंग परितार चढ्य फुल हास्य फुल निहस्य फुल
मये नर सिंह वीर वसल योने य फुल कावास कुर्य

नहि मेरा यास गुरु कि शक्त मे रि नक्त फुरो मंत्र इ श्वरो वाचा
॥ श्री ३ ॥ नाशक स्वान स वल घं राजा विये राज व स्या मंत्र
जुलो ॥ १० ॥ ॐ नमो आदेश गुरु को ३ मे रि वट मे मो हनि
मो ह खलक संशार पु हरि मो ह मे हरि मो ह वाक्कि वट वा हा
मो हो या नि कि व रि मो ह रि मो य श र वे हा य स रि मो हो हा
ट वे हा ह त्वा रि मो हो या र दोस्त का मन मो ह न हा मो द र का
हो २

मन मो ह न अ व की देख जे रे वरे मे फे देख मे रे घां य य र य ते
रे सिर प चो ष ठ यो गि नि च क नि यो र व डि गुरु कि शक्त मे रे
भक्त फुरो मंत्र इ श्वरो वाचा ॥ श्री ३ ॥ नक्त सिर य के क का
या व जय वा धि ला व मंड ल द र के यि ना भु य थाने गने स यो
गि नि पू गा या य चे क स य ना म्ना पु ने मि स वु ले मंत्र यो ह्ये ३ नि

यशजायता सर्वलोकभाहलवशला ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥
 ॐ विष्णुति निदा श्री अद्यार श्री वमात्रा पत आता अमुक्तिव
 सायिनि अमोद हि सर्वतुर कंहं गमेरुति ॥ १००० ॥ अल ॥ अ
 मंत्रन विष्णुति समव येनियं मिसायर्क हालवस शला ॥
 ॥ ॐ ॥ १ ॥ कीं जीं श्रीं ॥ अल न ला हा वा ग ल न

१२	१२	२	७
६	३	१६	१५
१८	१३	८	१
४	५	११	१०

(वाफतीन छक नऊ खोद हपाच दाने
 म्हाकाः ॥



८	१	६
३	५	७
१	२	२

१००० यस्यास्तनिपायानस्य निरुल्लसिद्धियुनः श्रुत्वा ॥ अलवमजियकमकुशला ॥
 १००१ देवदह ००१ ॥ यत्तुहिनैः अनामलाया हिनवायनाम सलावननवठयथस
 १००२ गलकः याव यियूकानवनयतदायकं उजवसुस आदिडं अकडं ०० कानथा याव
 १००३ दथसनामवायाव धुयजययनय सलावननो कथ्यावथ हावनाथ ॥ अकषर्नम
 १००४ कुशला ॥ ॥ डं ०० विनु (ग) वन ०० डं ॥ १ सावठी निलकंठत्वा ॥ १ सावठी लावन
 १००५ ठल्यं कृत्वा नाथनयमयत् अन्नन निलकंठत्वा सर्वविदया रवत् ॥ ३ ॥

[illegible]

ठाउनमनुशला॥ ॥न२॥ समानयावानिष्कटिकाय जवनयो
दागुलितिन श्रुत्वा यादयादाक यानालेक उधन समराग
यादावलाक कोलथोयालासधुदावनय धलधासलाखेधा दाव
योनिशला॥ ॥ ॐ नमः सर्वार्थसाधनिस्वाहा॥ कालेन सिद्धियायना
जय १००० धन जययाय सहदवि गलावनववूलाव अनयुर्वनिय
सर्वलाकवधशला॥

ॐ ह्रीं अमर्कमवध्वं कुरु कुरु स्वाहा॥ अर्यमं स्रुमं जय स्रुमि
नमय श्रुननमकुनसफारिमकुयित्वा धार्यपेक्षागसकेन
कृतानाशोखकेगृहवेसं स्वावधुर्ववधे ध्वयं जमकुवलाव
न॥ नाजवध्वतवनि॥ ॥ ह्रीं स्वाहा प्रकाशिकसिनिमक
नयउधनीठाननासय ह्रीं रुद्र स्वाहा॥ कालेन॥ चिकुलायया
गुं गुलिकपयं मकलसनयावेकुफयकलानिवशला॥

हायमलानमंशलोहनियगलावेदमलाभिलावनमाला
नालकायलविलायाश्रुगुलिहसांपूनउनकुमानिसूग
काइछिनिठुयकाइछिस्वानहालनकलवायावासलताग
नियकुवलसूयायायामाकृत३कापूतन३कायथन३
लमलसनयमाकापूतनीडायादवनमिनयक३

माकावनयका४यलनकनातलिघाय५कुमानि
सूगसिधलनापानयावकानहिभा॥मकेन॥केसवाधंवूला
ठिकेसवाधंवूलाठिकिवाहिकिदटिअलफुगडवर्वदिजि
र्यावाधंवूयानालुवा२मालवाधंवूसनगुवा२द्वियि
इवानद्वियिणि२२सूका२कैजागेवायेगे२दहि

Handwritten text in Devanagari script, likely a title or introductory passage, appearing on the top half of the manuscript page.

18
Handwritten text in Devanagari script, appearing on the middle section of the manuscript page.



Handwritten text in Devanagari script, appearing on the bottom section of the manuscript page.

1.155

ASHA 47